Modern theory of wages

Indu Kumari.

Assistant. Professor,
Dept. of Economics,
B. N. College, Bhagalpur, T.M.Bhagalpur universi

In economics, the price paid to labour for its contribution to the process of production is called wages

श्रमिक को उसके कार्य के बदले जो भुगतान या पुरस्कार दिया जाता है उसे मजदूरी कहते हैं । कार्य का अर्थ मानसिक व शारीरिक दोनों प्रकार के श्रम से है। मजदूरी शब्द का प्रयोग संकुचित तथा विस्तृत अर्थों में किया जाता है। संकुचित अर्थ अर्थ में मजदूरी का अभिप्राय श्रमिकों को मिलने वाला पारिश्रमिक से है जो उनके श्रम के बदले मिलते हैं। विस्तृत अर्थ में केवल मजदूरी से अभिप्राय नगद तथा किस्म के रूप में प्राप्त भुगतान से है।

- As products the prices are determined with the help of demand and supply curve. Similarly, the wages (prices of services rendered by labour) is also obtained with the help of demand and supply of labour. Therefore, for the determination of wage level, it is necessary to know the demand for labour, supply of labour, and the interaction between them.
- ।जिस प्रकार वस्तुओं का मूल्य मागं एवं पूर्ति की सापेक्षिक शक्तियों द्वारा निश्चित होती है, उसी प्रकार श्रम का मूल्य अथवा मजदूरी भी श्रमिकों की मांग एवं पूर्ति द्वारा निर्धारित होती है इस प्रकार इस सिद्धांत में मांग पूर्ति दोनों के महत्व को स्वीकार किया गया है इस सिद्धांत को मजदूरी की मांग पूर्ति का सिद्धांत कहते हैं इस सिदधांत के अनुसार मजदूरी उस बिंदु पर निश्चित होती है जिस पर श्रम की मांग श्रम की पूर्ति के बराबर होती है

Factors Determining Demand for Labor:

- The demand for labor is dependent on various factors.:

- ***Demand for the product***
- ***Marginal physical productivity***
- ***Price of other factors***
- *श्रम की माग वस्तुओं की मांग पर निर्भर करती है ,तथा अन्य साधना की प्रवृत्ति पर भी निर्भर करती है तथा श्रम की मांग श्रम की सीमांत उत्पादकता पर निर्भर करती है।*

demand for product

The demand for labour is derived from the demand of the product it produces. In case, the demand for the product increases, the demand for labour would also increase However, this is the expected demand of the product and not the current demand. Therefore, the expected demand of the product determines the demand for labour. Moreover, along with the magnitude of demand, the elasticity of demand for labour is also need to be determined. The elasticity of output helps in determining the elasticity of labour.

वस्तुओं की मांग के बढ़ने से श्रम की मांग बढ़ेगी और वस्तुओं की मांग घटने से श्रमिकों की मांग भी घटेगी श्रमिकों की मांग कभी भी प्रत्यक्ष रूप से नहीं की जाती है इसलिए श्रम की मांग व्युत्पन्न मांग कही जाती है ।

MARGINAL PRODUCTIVITY

- Refers to one of the most important factor that helps in the determination of demand for labor. An employer hires labor to increase his/her profit. For this, the employer needs to provide wages to avail the services of labor' He/she would employ labor until the increase in number of labor would increase the net output but at the diminishing rate.
- सीमांत उत्पादकता किसी भी साधन के मांग के लिए प्रमुख आवश्यक तत्व होती हैं। श्रम की मांग श्रम की सीमांत उत्पादकता पर निर्भर करती है। श्रम की सीमांत आगम उत्पादकता श्रम के भुगतान को निर्धारित करती है।

OTHER FACTORS OF PRODUCTION

The price and amount of other factors of production employed affects the demand for labour. For example, if other factors of production are expensive then the demand for labour would be high. However, if other factors are available at cheaper quantity, then the demand for labour would reduce. Similarly, an increase in the demand of technology would reduce the demand for labour.

यदि उत्पत्ति के अन्य साधनों के मूल्य में कमी आती है तो श्रमिकों की जगह मशीनों का प्रयोग बढ़ाया जाएगा और श्रम की मांग घट जाएगी इसके विपरीत यदि मशीनों के मूल्य में वृद्धि हो जाए या मशीन आसानी से उपलब्ध ना हो तो मशीनों की जगह मजदूरों को लगाया जाएगा फल स्वरुप मजदूरों की मांग बढ़ेगी।

The demand schedule of labour shows that the decrease in wage would increase the demand for labour. It is similar to the demand schedule of a product.

तालिका से स्पष्ट होता है कि जैसे-जैसे मजदूरी की दर में कमी होती है मजदूरों की मांग बढ़ती। ₹75 प्रति इकाई पर मजदूरों की संख्या 20 थी जैसे-जैसे मजदूरी में कमी आती है अर्थात यह घटकर ₹35 प्रति इकाई हो जाती है मजदूरों की मांग में वृद्धि होकर 100 इकाई हो जाती है

Wages	Demand for labour
75	20
65	40
55	60
45	80
35	100

स्पष्ट होता है श्रम की मांग तथा मजदूरी की दर में विपरीतसंबंध होते हैं। श्रम की मांग अन्य उत्पादन के साधनों की तरह व्युत्पन्न मांग है तथा श्रम का भुगतान अथवा मजदूरी उसकी एमआरपी अर्थ सीमांत आगम उत्पादकता के बराबर होती है, तथा एमआरपी उसका मांग वक्र है जैसे-जैसे श्रम के इकाइयोंमें वृद्धि होती है एमआरपी गिरता जाता है इसीलिए श्रम की मांग वक्र नीचे दाएं और ढालू होती है।

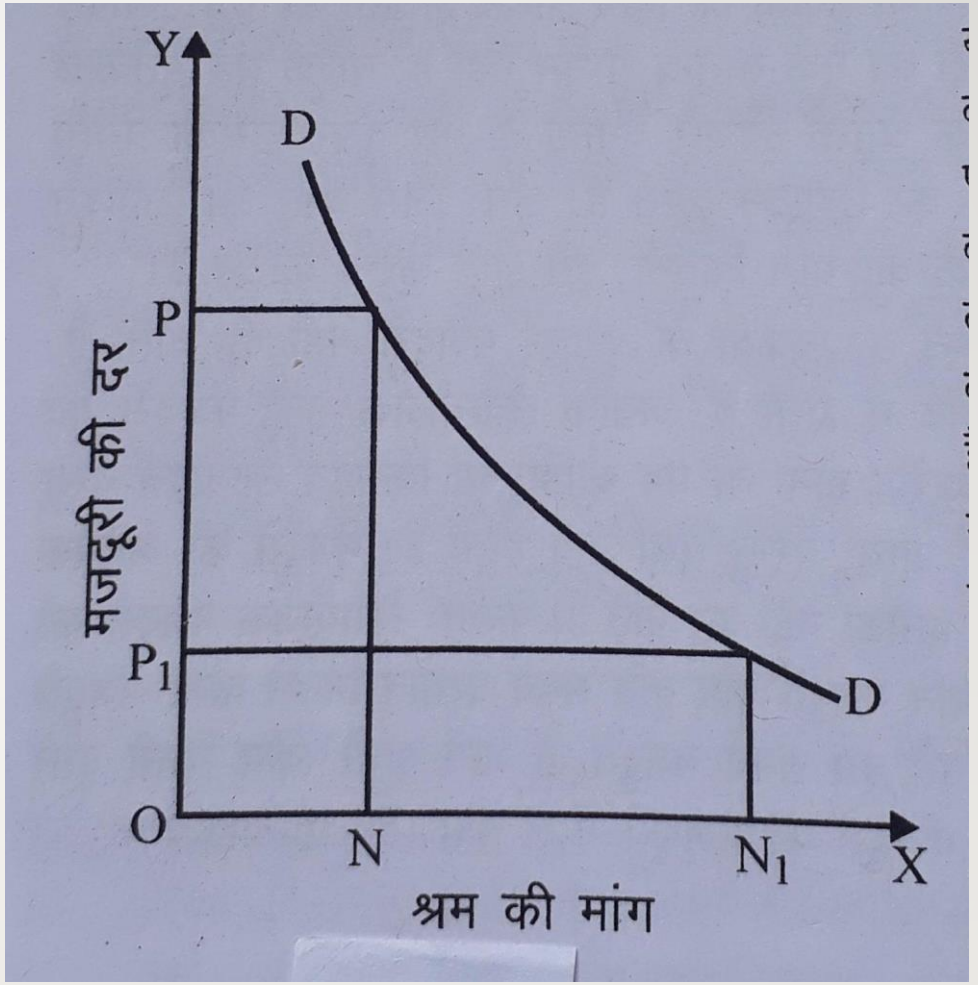

Supply of Labour:

Supply of labour refers to the number of hours spent by labour in the factor market. In an economy, there are several factors that influence the supply of labour. Some of the factors are wage rate, population size, age structure, availability of education and training employment opportunities for women, and social security programs.

On the other hand, in an industry, the supply of labour is less elastic in the short-run. In this case, the supply of labour is dependent on the accessibility of workers in the nearby areas and their willingness for overtime work. However, the supply of labour becomes more elastic in the long-run. Industries attract labour by providing higher wages, training facilities, and good working conditions. Therefore, the supply curve of labour for an industry is upward sloping.

श्रम की पूर्ति को दो रूपों में व्यक्त किया जा सकता है प्रथम प्रचलित मजदूरी दर पर कितने श्रमिक काम करने के लिए तैयार हैं तथा दूसरे प्रचलित मजदूरी दर पर श्रमिक कितने घंटे के लिए काम करने के लिए तैयार हैं। श्रम की पूर्ति प्रायः निम्न तीन कारणों पर निर्भर करती है जनसंख्या का आकार, जनसंख्या का अनुपात जो काम करने के लिए तैयार है, तथा प्रत्येक श्रमिक कितने घंटे के लिए काम करने के लिए तैयार हैं।

तालिका से स्पष्ट होता है कि श्रम की पूर्ति तथा मजदूरी की दर में प्रत्यक्ष संबंध होते हैं सामान्यतः श्रम की पूर्ति वक्र धनात्मक ढाल वाले होते हैं अर्थात जैसे-जैसे मजदूरी की दर भर्ती है वैसे वैसे श्रम की मात्रा में वृद्धि होती है। ता◌िलका से स्पष्ट होता है कि जब मजदूरी दर ₹75 होती है तब श्रम की मात्रा 100 इकाई रहते है जैसे-जैसे मजदूरी दर घटकर ₹ 35 हो जाता है। श्रम की पूर्ति भी क्रमशः बढते हुए 100 से 20 इकाई पर आ जाती है से स्पष्ट होता है की मजदूरी दर के साथ इसका प्रत्यक्ष संबंध होते हैं

Wages	Supply
75	100
65	80
55	60
45	40
35	20

OX पर श्रम की मात्रा OY अक्ष पर मजदूरी की दर को दिखाया जा रहा है। SS पूर्ति वक्र है, जब मजदूरी बढ़कर OP से OP1हो जाता है ,तब श्रम की पूर्ति भी बढ़कर ON से ON1 हो जाती है।रेखा चित्र से स्पष्ट होता है कि श्रम की पूर्ति रेखा का ढलान धनात्मक है जो इस बात को स्पष्ट करती है कि मजदूरी की दर तथा मजदूरों की मात्रा में प्रत्यक्ष संबंध होते हैं ।

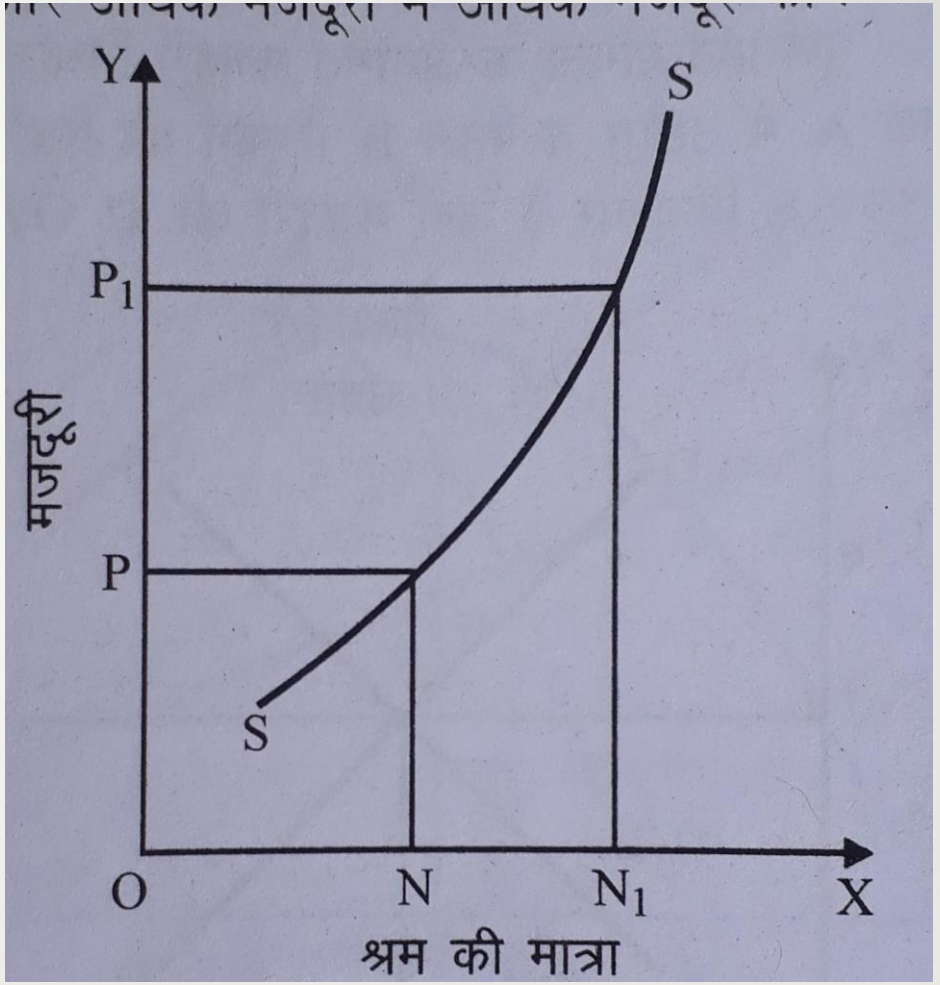

सामान्यत श्रम की पूर्ति वक्र ऊपर दाई और ढालु होती है , अर्थात मजदूरी और श्रम की मात्रा में प्रत्येक संबंध होते हैं। परंतु कई बार मनोवैज्ञानिक कारण उसके फलस्वरूप श्रम की पूर्ति एक सीमा तक मजदूरी बढ़ाने से बढ़ती है और बाद में मजदूरी बढ़ाने से कम होती है ऐसी स्थिति में श्रम की पूर्ति व पश्च बंकम होती हैं।

मजदूरी OW से OW1 हो जाती है तो पूर्ति बढ़कर WP से W1P1 हो जाती है, परन्तु जब मजदूरी बढ़ कर OW2 हो जाती है तब श्रम की पूर्ति घट कर W2P2 हो जाती हैं।

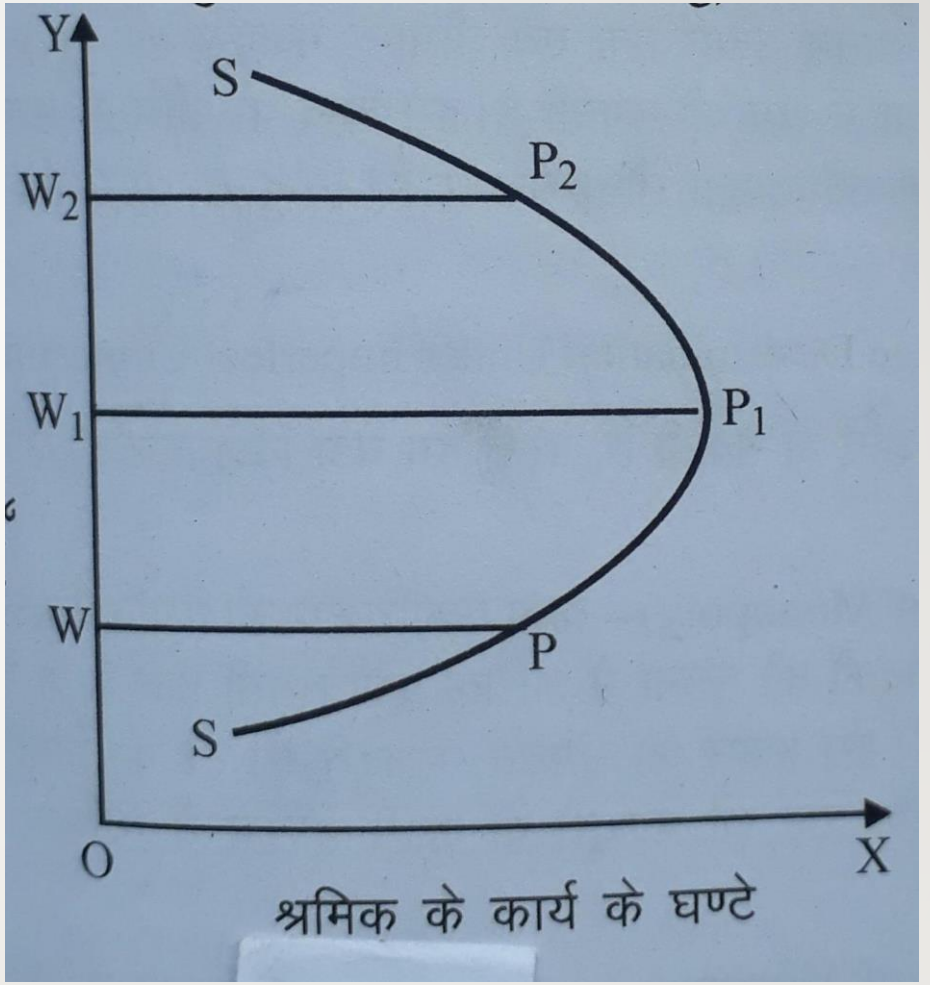

- **Under perfect competition, equilibrium wage rate is determined where demand for labour is equal to supply of labour.**
- In other words, under perfect competition, a labourer will get wage equal to its marginal revenue productivity in the long run.
- In Figure show that the units of labour have been measured on X-axis and wages on Y-axis. DD and SS are the demand and Supply curves of labourers respectively. Both the curves intersect each other at point E which determines wage rate OW and equilibrium unit of labour is ON in the market.

श्रम बाजार में मांग और पूर्ति के वक्र द्वारा मात्रा द्वारा निर्धारित मजदूरी को दिखाया गया है।

चित्र के अनुसार मांग DD वक्र और पूर्ति SS वक्र आपस में एक दूसरे को E बिंदु पर काटते हैं । यहां मजदूरी OW तथा ON संतुलित श्रम की मात्रा निर्धारित होती है।

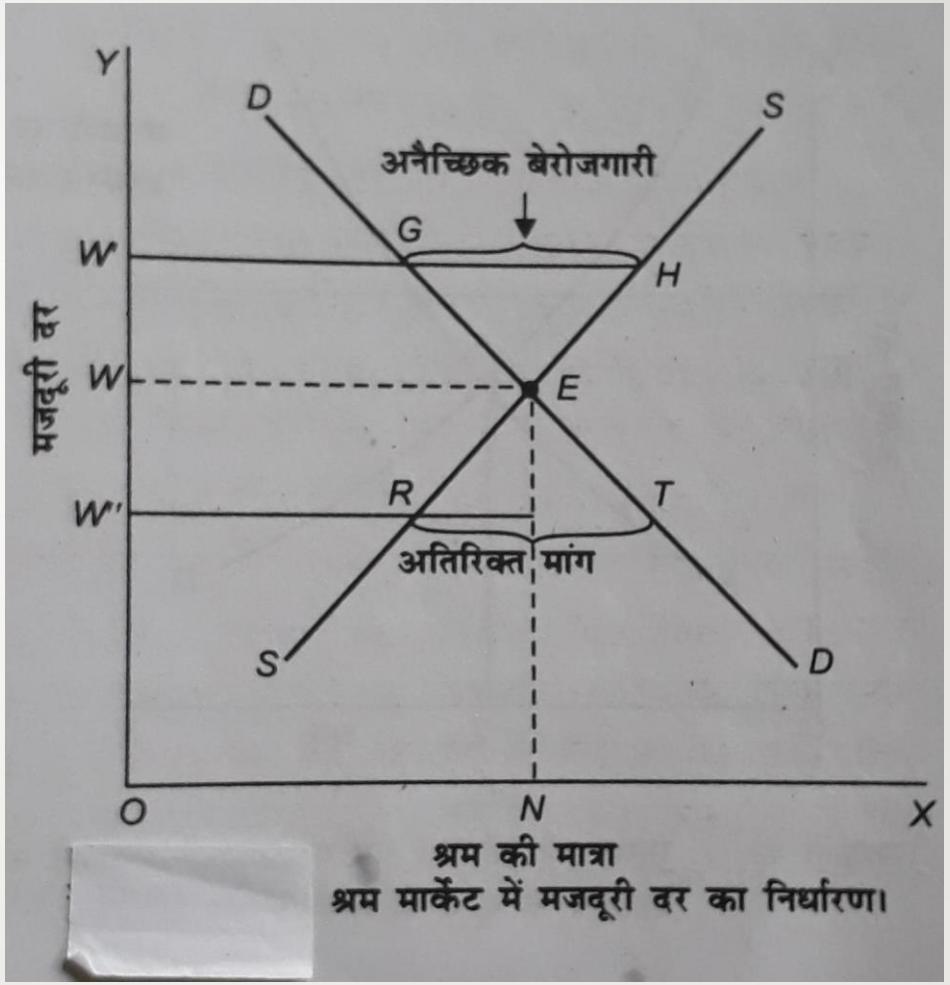

श्रम मार्केट में मजदूरी दर का निर्धारण।

पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत एक उद्योग में मजदूरी दर का निर्धारण मांग एवं पूर्ति के सिद्धांत के आधार पर होता है। कीमत जो यहां तय होती है किसी एक फार्म के लिए दी हुई मानी जाती है जैसों के रेखाचित्र से स्पष्ट है,OW मजदूरी की दर यदि उद्योग में तय हुआ है तो इसी मजदूरी की दर को फर्म भी स्वीकार करके उत्पादन क्रिया करेंगे।

रेखा चित्र में मांग एवं पूर्ति की रेखाएं एक दूसरे को E पर काटती हैं, तथा मजदूरी की दर OW निर्धारित होती है और इसी तरह दर पर OL श्रमिक कार्य करते हैं जब एक बार संपूर्ण उद्योग के लिए मजदूरी के दर निर्धारित होती है तो उसे सभी फलों को स्वीकार करना पड़ता है।

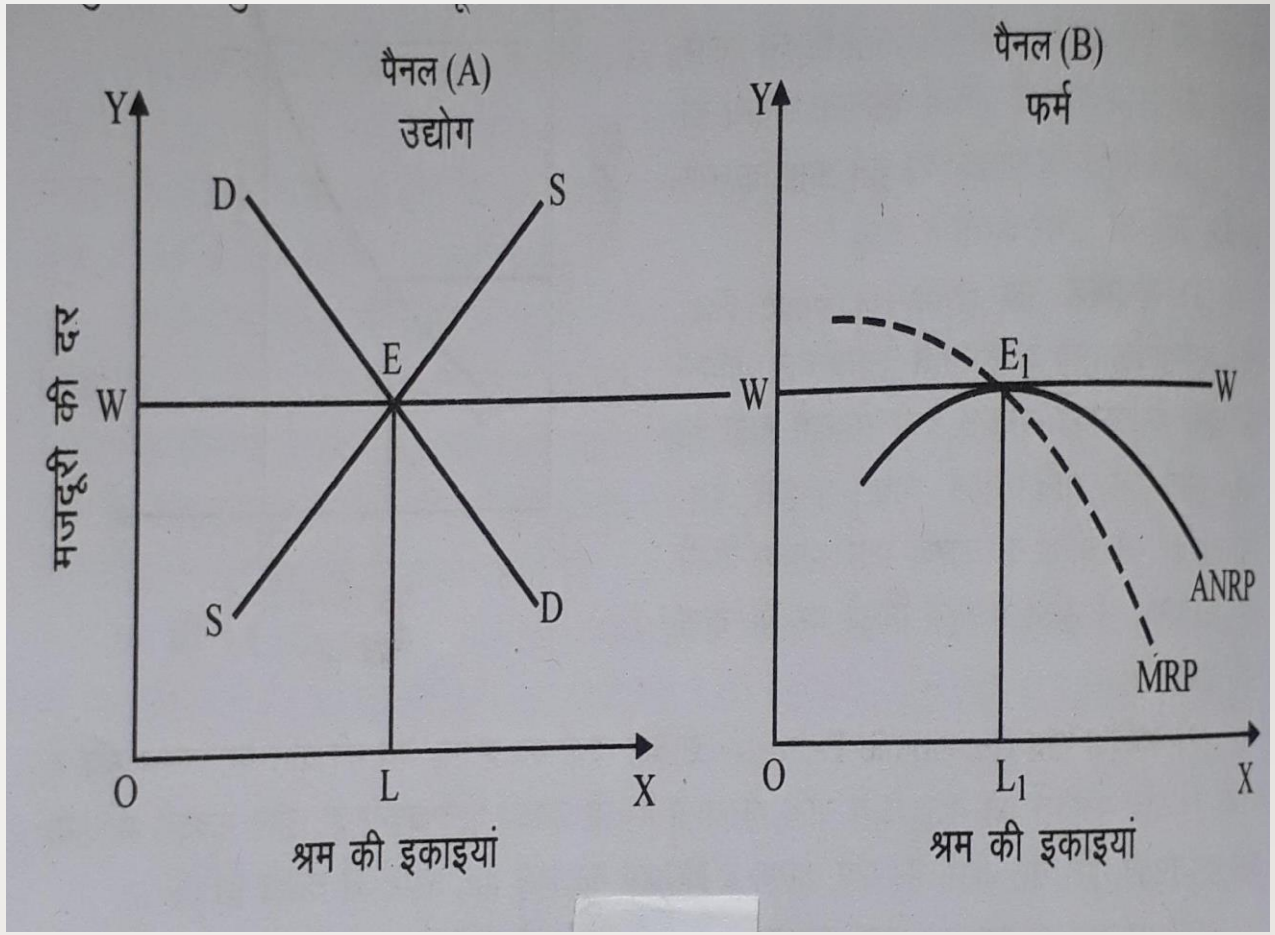

- पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत दीर्घकाल में किसी फार्म की कीमत उसकी औसत एवं सीमांत लागत के बराबर होती है। ठीक उसी प्रकार श्रम की कीमत भी उसकी औसत उत्पादकता तथा सीमांत उत्पादकता के बराबर होती है। दो बातों को आधार बनाकर अल्पकाल एवं दीधकाल में फर्म में मजदूरी की प्रचलित दर इसका निर्णय किया जाता है यह 2 शर्ते निम्न प्रकार हैः

1. MRP=MW
2. ARP=AW=MW

Thank You!
shutterstock.com • 1153070893